संक्षेप

राजस्थान में टोंक जिले का नमदा हस्तशिल्प मुख्य हस्तशिल्पों में से एक है। टोंक के नमदा हस्तशिल्पों की देश–विदेश में मांग है व वैश्विक बाजार में यह अपनी पहचान बनाए हुए है। नमदा उद्योग से जुड़ा हुआ एक महत्त्वपूर्ण पहलू अलंकरण है। परन्तु अलंकरण करने के लिए कोई निश्चित विचार, विधि और प्रक्रिया का प्रयोग नहीं किया जाता। परम्परागत स्थानीय भेड़ की ऊन के अलावा अन्य संभावित जान्तव रेशों (Animal Fibre) का उपयोग नमदा निर्माण हेतु अलंकरण की दृष्टि से करना और नमदा निर्माण की सम्पूर्ण प्रक्रिया अध्ययन करके प्रत्येक चरण पर अलंकरण की संभावना ढूंढना यह उद्देश्य रखते हुए ''नमदा हस्तशिल्प के आधुनिक अलंकरण संकल्पनाओं का विकास : जिला टोंक, राजस्थान के संदर्भ में'' इस विषय पर शोध कार्य किया गया।

शोधकर्त्री ने उद्देश्य को साध्य करने के लिए विविध भेड़ों के ऊन रेशों का व अन्य जान्तव रेशों के रूप में ऊंट के बालों का प्रयोग किया है। अलंकरण अवधारणा को स्थापित करने के लिए अलंकरण विचार, विधि और प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अलंकरण की अधिकतम संभावनाओं का प्रयोग किया है। ऊन रेशे, उसके गुण विशेष और नमदा बनाने की प्रक्रिया तथा नमदा बनने के बाद तैयार ऊनी वस्त्र पर रंगाई, छपाई, कढ़ाई व अन्य अलंकरण की विविध तकनीकी प्रक्रियाओं का सहारा लिया गया है। नमदा के पुनः उपयोग (Reuse) व पुनर्चक्रण(Recycle) उद्देश्य को साध्य करते हुए नमदा कतरनों से अलंकरण के नये आयाम भी जोड़े गये हैं। नमदा अलंकरण के बौद्धिक सम्पदा अधिकार (Intellectual Property Rights) के सम्बन्ध में जागृति लाने का प्रयास किया गया है।

इस शोध का निष्कर्ष यह निकला है कि नमदा बनाते समय प्रत्येक चरण पर नमदे से निर्मित वस्तुओं के अलंकरण का एक नया आयाम जोड़ सकते हैं। निर्माण

प्रक्रिया की विधि में थोड़े परिवर्तन करके अलंकरण तथा उपयुक्त वस्तुएं बनाई जा सकती हैं। राजस्थान में ही नमदा हस्तशिल्प के अलावा टोंक और आसपास के अन्य जिलों में स्थानीय हस्तशिल्पों की विशाल परम्परा है। कुछ हस्तशिल्पों के तकनीकी पक्षों का अभ्यास करके उन्हें नमदे के साथ जोड़कर एक नई अलंकरण पद्धति का निर्माण हो सकता है।

अलंकरण विचार यह एक तात्त्विक, वैचारिक, मानसिक विचार है, जिसे अलंकरण विधि और प्रक्रिया के विविध चरणों से मूर्त स्वरूप दिया जाता है। यह एक वैज्ञानिक विधि है। भारत की इस नमदा हस्तशिल्प की विरासत को और अधिक ऊँचाई पर ले जाने के लिए डिजाइनर की दृष्टि से अलंकरण विचार तथा विधि और प्रक्रिया को अपनाना ही होगा, जिससे नई आधुनिक अलंकरण संकल्पनाओं के विकास की संभावना शत प्रतिशत बनी रहेगी।